ब्रह्मलीन परमसन्त डॉ. शक्ति कुमार जी

*****

परमात्मा की विशेष कृपा होती है तो मानव-मात्र के उद्धार के लिए कोई महान आत्मा सतलोक से पृथ्वी पर भेजी जाती है जो भूले भटकों को संसार के बंधनों से मुक्त करा कर परमार्थ की राह पर लगाती है और मनुष्य जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होती है ! ऐसी ही महान विभूतियों में से एक थे – दीनता एवं सेवा की प्रतिमूर्ति डॉ. शक्ति कुमार जी !

डॉ. शक्ति कुमार जी का जन्म 5 अक्टूबर 1948 को हुआ था ! आपके पूज्य पिताजी श्री के 0बी0 सक्सेना एवं माताजी दोनों ही रामाश्रम सत्संग, सिकंदराबाद (उ. प्र.) के तत्कालीन सर्वोच्च आचार्य-अध्यक्ष परमसन्त महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज से दीक्षित थे तथा उनका पूज्य गुरुदेव के चरणों में अगाध प्रेम था ! माता-[पिता की छत्र छाया में रहते हुए आपके हृदय में भी सत्संग के प्रति अनुराग उत्पन्न हुआ तथा आपने अपने पिता जी के साथ पूज्य गुरुदेव महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज की सेवा में जाना आरम्भ किया ! सर्व प्रथम 1966 में आप अपने पिता जी के साथ पूज्य महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी की सेवा में उपस्थित हुए ! आपने बाद में महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी से ही दीक्षा प्राप्त की ! पूज्य गुरुदेव की आप पर विशेष कृपा थी जिसका दर्शन आपके जीवन से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण प्रसंगों से मिलता है !

गुरु कृपा से मेडीकल कॉलेज में प्रवेश

पूज्य शक्ति कुमार जी ने मौलाना आज़ाद मैडीकल कॉलेज, दिल्ली से एम.बीबी.एस.उपाधि प्राप्त की थी ! इस प्रतिष्ठित कॉलेज में उन्हें प्रवेश महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी के आशीर्वाद से प्राप्त हुआ था ! इस प्रसंग का उल्लेख पूज्य शक्ति भाई साहब ने अपने एक लेख - "उन दयानिधान की दया क्या-क्या जलवा नहीं दिखा सकती है " में किया है !

परम पूज्य गुरु महाराज की कृपा से जीवन दान

पूज्य शक्ति कुमार जी के जीवन की एक घटना सन 1978 की है जब उन्हें परमपूज्य महात्मा जी की कृपा से जीवन दान मिला !

पूज्य शक्ति कुमार जी को पूज्य डॉ. करतार सिंह जी द्वारा अपना उत्तराधिकारी घोषित करना

परम पूज्य गुरुदेव डॉ. करतार सिंह जी रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद के सर्वोच्च आचार्य-अध्यक्ष थे ! हमारे सत्संग की यह परम्परा रही है कि पीठासीन गुरु अपने जीवन काल में ही अपने उत्तराधिकारी की घोषणा कर देते हैं जो उनके स्वर्गारोहण के पश्चात् गुरु -गद्दी पर आसीन होकर सत्संग के कार्य को आगे बढ़ाते हैं ! इस वंश-परम्परा का निर्वहन करते हुए पूज्य सरदारजी महाराज ने ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज की पवित्र जन्म-शती के अवसर पर दशहरा भंडारे ,ग़ाज़ियाबाद में दिनांक 13 अक्टूबर, 1994 को सम्पन्न कार्यक्रम में पूज्य डॉ. शक्ति कुमार जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया ! इस पुनीत अवसर का उल्लेख एक वरिष्ठ सत्संगी बहिन ने जन्मशती के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका " भावांजलि " में इस प्रकार किया है :

"गुरु वंदना आदि के उपरान्त एक अभूतपूर्व दृश्य देखने का सौभाग्य समस्त सत्संग परिवार को मिला ! पूज्य भाई साहब (गुरुदेव डॉ. करतारसिंह जी) ने एक थाली में रोली-चावल, पुष्पहार व मिष्ठान मंगवाया और डॉ. शक्ति कुमार को भंडारा-किचिन से बुलवाया ! किसी को कुछ भी भान न था कि यह क्या हो रहा है ! तभी मंच पर शक्ति भाई साहब के बैठने के पश्चात पूज्य सरदारजी भाई साहब ने स्वयं उठकर डॉ. शक्ति कुमार जी को तिलक लगाया, गले में माला पहनाई, प्रसाद दिया और नमन किया ! फिर उन्होंने गुरुदेव के चित्र का चरणस्पर्श करके उपस्थित सत्संग समुदाय के सामने घोषणा कर दी कि - "मेरे बाद डॉ. शक्ति मेरे काम को संपन्न करेंगे !"

यह दृश्य अत्यंत ह्रदय-स्पर्शी और करुण था ! सभी उपस्थित भाई-बहिन रो उठे थे ! सभी के ह्रदय में यही आकाँक्षा थी कि हमारे परम पूज्य और परम प्रिय सरदार जी भाई साहब सदा ही गुरुपद को सुशोभित करते हुए आध्यात्म की पीयूष वर्षा करते रहें ! डॉ. शक्ति जी तो अत्यन्त विह्वल थे ! आदरणीय सरदारनी भाभी जी ने भी शक्ति जी को प्रसाद खिलाया तथा एक आशीर्वचन भी गाया - " पूता माता की आसीस ....."

इस प्रकार रामाश्रम सत्संग की परम्परा एवं संस्था के विधान के नियम 5(3) तथा 10 के अनुसार पूज्य गुरुदेव डॉ. करतारसिंह जी महाराज ने दिनाँक 14-11-1994 को लिखित आज्ञा-पत्र जारी करके अपने बाद अपने स्थान पर पूज्य शक्ति कुमार जी को रामाश्रम सत्संग (रजि.) गाज़ियाबाद के सर्वोच्च आचार्य के पद पर नियुक्त किया ! आपको इज़ाज़त ताअम्मा (सम्पूर्ण गुरु पदवी) पूर्व में ही प्रदान की जा चुकी थी !

रामाश्रम सत्संग के अध्यक्ष-आचार्य का पद ग्रहण

15 जून, 2012 को परमपूज्य डॉ. करतार सिंह जी महाराज अपनी जीवन लीला पूर्ण कर ब्रह्मलीन हो गए ! उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात् उपरोक्त व्यवस्था के अनुसार पूज्य शक्ति जी ने सत्संग के सर्वोच्च आचार्य-अध्यक्ष का गुरुतर दायित्व ग्रहण किया तथा अपने जीवन-पर्यन्त इस पद पर आसीन रहकर अपने पूर्वज गुरुजनों के मिशन को कुशलता पूर्वक आगे बढ़ाते रहे !

असीम वेदना और मार्मिक पीड़ा का दिन

17 अप्रेल, 2020 का दिन हम सभी सत्संगी-साधकों के लिए असीम वेदना और मार्मिक पीड़ा का दिन आया जब अत्यंत अप्रत्याशित समाचार मिला कि पूज्य शक्ति भाई साहब इस नश्वर शरीर को त्याग कर, इस जगत के मोह बंधनों को तोड़ कर, परलोक सिधार गए हैं ! उनका यह महाप्रयाण इतना आकस्मिक और अप्रत्याशित था कि इस पर सहसा विश्वास करना भी कठिन हो रहा था ! हम सब विधि के इस विधान के समक्ष विवश होकर ढगे से रह गए ! सत्संगी भाइयों को कोविड काल के प्रोटोकॉल और प्रतिबन्धों के कारण पूज्यवर के अन्तिम दर्शन कर श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर भी नहीं मिल सका !

साधना के उच्चतम शिखर पर पहुँच कर रामाश्रम सत्संग को नई ऊँचाइयाँ प्रदान

पूज्य शक्ति भाई साहब भाग्यशाली थे कि उन्होंने एक सत्संगी परिवार में जन्म लिया तथा उन्हें महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज और महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज जैसे महान संतों की शरण और आशीर्वाद का सौभाग्य मिला ! आप पर उनकी बिशेष कृपा और छत्रछाया थी ! आप उनके मुराद थे ! अल्पायु में ही आपने साधना के उच्चतम शिखर पर पहुँच कर रामाश्रम सत्संग को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं ! आचार्य-अध्यक्ष के रूप में आपका कार्यकाल लगभग 8 वर्ष का रहा ! इस अल्पावधि में आपने सत्संग का संचालन और मार्गदर्शन अत्यंत कुशलता से करते हुए संख्यात्मक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टि से अभूतपूर्व विकास और विस्तार किया ! अत्यंत सहज और सरल, प्रेम पूर्ण व्यवहार और सेवा और समर्पण से सत्संग का संचालन और भाइयों की सेवा और मार्गदर्शन किया ! अपने स्वस्थ्य की चिन्ता न करते हुए, आपने देश के विभिन्न स्थानों पर सत्संग के सेंटर बनाकर , स्वयं वहाँ जाकर सत्संग के आयोजन अपने मार्गदर्शन में संपन्न करवाये ! प्रमुख वार्षिक भण्डारों के साथ-साथ आपने क्षेत्रीय सत्संग आयोजन को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जिससे अधिकतम भाई-बहिन सत्संग का लाभ प्राप्त कर सकें ! सेंटर्स पर नारायण - सेवा कार्यों के आयोजनों को महत्व दिया गया ! रामाश्रम सत्संग की वेबसाइट, फेसबुक ग्रुप्स तथा सत्संग के समस्त साहित्य (पुस्तकें,

राम सन्देश, प्रवचनों के संकलन आदि) की ईबुक्स के रूप में डिजिटलीकरण को आपने अपने मार्गदर्शन में व्यक्तिगत रूचि लेकर प्रोत्साहित किया !

भण्डारों के अवसर पर परम्परागत आयोजन में आप ध्यान--साधना पर विशेष बल देते थे ! इस अवसर पर वह स्वयं बहुत कम प्रवचन करते थे, अपने गुरुजनों (महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी तथा महात्मा डॉ. करतारसिंह जी महाराज) के सारगर्भित प्रवचनों के प्रसारण तथा पाठन को ही वरीयता देते थे ! पूज्य सरदारजी भाई साहब के ऐसे ही एक प्रवचन पर आधारित पूज्य शक्ति भाई साहब का एक सन्देश यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है !

ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतारसिंह जी साहब की 100-वी जन्म जयन्ती व प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर पूज्य गुरुदेव परमसन्त डॉ. शक्ति कुमार जी द्वारा व्यक्त उदगार -

"अटूट प्रेम और श्रद्धा का जीवन्त उदाहरण अगर कोई है तो वे हैं हमारे गुरुदेव परमसन्त डॉ. करतारसिंह जी साहब थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन अपने गुरुदेव (महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज) को समर्पित कर दिया ! वे अपने गुरुदेव के किसी भी आदेश का पालन करना अपना धर्म समझते थे !

ऐसे बहुत कम संत हुए हैं जो शतायु हुए हों और हमारे गुरुदेव उनमें से एक हैं ! आज स्थूल रूप में गुरुदेव हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन यह भी सत्य है कि सूक्ष्म रूप में आज भी वे हमारे साथ हैं और हम सब पर उनकी अपार कृपा निरन्तर बरस रही है इसको हम बार-बार महसूस कर रहे हैं और करते रहेंगे ! वे बड़े ही प्यार से कहा करते थे - "बोलो, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?" हर कोई इस क़दर भाव विभोर हो जाया करता था कि आगे कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं होती थी ! गुरुदेव हमेशा एक बात पर ज़ोर दिया करते थे कि, " आप चाहे कोई भी साधन करिये दीनता को तो अपनाना ही होगा ! अहँकार से प्रभु नहीं मिलते ! अहँकार ही हमारी सबसे बड़ी बाधा है ! गुरुदेव का यह भी कहना था कि - " हमें निरन्तर मनन और स्व-निरीक्षण (introspection) करना चाहिए .....हम कहाँ हैं और हमारी मानसिक स्थिति क्या है ?"

हम ईमानदारी से अपने भीतर झाँक कर देखें कि क्या हमने सच्चे रूप में दीनता को अपनाया है ? क्योंकि यह सत्य है कि जब तक हम दीनता को नहीं अपनायेंगे हमारा कल्याण नहीं हो सकता ! हम दूसरों के अवगुण तो देखते हैं परन्तु यदि हम अपने भीतर झाँक कर देखें तो जो अवगुण हम दूसरों में देखते हैं वो अवगुण हमें अपने अन्दर ही नज़र आयेंगे ! उन्हें दूर करने के लिए निज-कृपा और गुरु-कृपा दोनों का ही सहारा लेना होगा !

आज समय आ गया है कि हम अपनी कमज़ोरियों को समझें और देखें कि हम उन कमियों को कैसे दूर कर सकते हैं और जैसा गुरुदेव चाहते थे वैसा बनने की कोशिश करें ! मेरा यह मानना है और सविनय अनुरोध है कि यदि हम सेवा को अपने जीवन में अपना लें तो हमारा जीवन बहुत ही सरल हो जायेगा और हम देखेंगे कि हममें दीनता और प्रेम दोनों ही अपने आप आ जायेंगे और हम उस परम अवस्था प्राप्त कर सकेंगे जो हमारे जीवन का लक्ष्य है !

हम सब अत्यन्त भाग्यशाली हैं कि हमें एक ऐसे महान संत परम पूज्य गुरुदेव डॉ. करतारसिंह जी की शरण मिली जिनकी असीम कृपा से हमारे न जाने कितने जन्मों के संस्कार एवं कर्मों से मुक्ति मिल गयी !आज भी यही महसूस होता है कि वे यहीं कहीं हैं और मैं समझता हूँ कि मेरी तरह और भी सत्संगी भाई-बहिनों को भी ऐसा महसूस होता होगा ! मेरा यह मानना है कि यदि हम आजीवन उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें तो भी कम है !"

प्रेम हो ' श्रीकृष्ण' का और नूर हो 'करतार' का

सत्कार श्री गुरु का करें, 'शक्ति' कृपा के वास्ते !!